THE KUPPUSWAMI SASTRI RESEARCH INSTITUTE

तमसो मा ज्योतिर्गमय

THE JOURNAL OF ORIENTAL RESEARCH MADRAS

UGC CARE LIST NO. 367
ISSN : 0022 - 3301

THE JOURNAL OF ORIENTAL RESEARCH MADRAS

(Founded by Mm. Prof. S. Kuppuswami Sastri)

2024 Vol. XCVII

तमसो मा ज्योतिर्गमय

THE KUPPUSWAMI SASTRI RESEARCH INSTITUTE
MADRAS - 600 004

2024

Price : Rs. 500 (India)

Foreign : $30: £25

Scanned with OKEN Scanner

Vol. XCVII, No.1
ISSN: 0022-3301 | YEAR 2024

पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचार

प्रो. बी. एल. जैन
विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ (राज.)
उषा शर्मा
शोध छात्रा, शिक्षा विभाग जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ (राज.)

सारांश– शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को उसके पूर्वजों के द्वारा संग्रहीत धरोहर, उनकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक विरासत और उनके संचित अनुभवों पर आधारित ऐसा ज्ञान प्रदान किया जाता है, जिससे व्यक्ति को उसके जीवन की समस्याओं के समाधान में सहायता प्राप्त होती है। शिक्षा व्यक्ति को मात्र ज्ञान ही नहीं देती है, बल्कि उसके उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में योगदान करती है। आंग्लकाल में शिक्षा में आई गिरावट को दूर करने के लिए जिन महापुरुषों ने काम किया उस शृंखला में पं. महामना मदन मोहन मालवीय का नाम उल्लेखनीय है। भारतीय संस्कृति के पोषक के रूप म मदन मोहन मालवीय ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की कमियों को दूर करने की दृष्टि से शिक्षा के स्वरूप, शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षक, शिक्षार्थी, विद्यालय, अनुशासन, स्त्री शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा एवं मूल्य शिक्षा पर अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं।

प्रमुख शब्दावली – संस्कृति, आत्म–साक्षात्कार, मूल्य शिक्षा, बौद्धिक, व्यावहारिक शिक्षा, शिक्षा स्वरूप, आत्म शुद्धि।

प्रस्तावना – विश्वगुरु के रूप में भारत देश सदैव से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता, विशाल साहित्य और महापुरुषों ने भारतीय शिक्षा के स्वरूप निर्धारण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान शिक्षा के स्वरूप निर्धारण में अनेक शिक्षाविदों ने शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। इन्हीं शिक्षाविदों में राष्ट्रनिर्माता के रूप में महामना पं. मदन मोहन मालवीय का नाम विशेष उल्लेखनीय है। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के शिलान्यास समाराह के अवसर पर मालवीय जी ने अपने व्याख्यान में कहा था–

"उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु
भविष्यतीत्येवमनः कृत्वा सततमत्यर्थं।"

अर्थात् मेरा कार्य अवश्य सिद्ध होगा, ऐसा दृढ निश्चय करके मनुष्य को आलस्य छोड़कर कल्याणकारी कामों में जुट जाना चाहिए।

जन्म एवं परिवार – पं. मदन मोहन मालवीय जी का जन्म इलाहाबाद (वर्तमान में प्रयागराज) में 25 दिसम्बर, 1861 को हुआ था। इनके पिता का नाम पण्डित ब्रजनाथ व्यास तथा माता का नाम मूना देवी था। मूलरूप में यह परिवार मालवा क्षेत्र से था, इसलिए इनके परिवार की मल्लई नाम से प्रसिद्धि थी, जो संशोधित होकर मालवीय नाम से जाना गया। मालवीय जी ने अपनी शिक्षा समाप्ति के बाद वकालत प्रारम्भ की। किन्तु अंग्रेजों के शासन से दुःखित भारतीयों की दशा देखकर उनमें दश भक्ति का भाव जाग्रत हुआ। निरक्षरता तथा गरीबी से त्रस्त लोगों को देखकर उनमें शिक्षा विस्तार तथा गुणात्मक शिक्षा का भाव जागा और उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अद्भुत कार्य किया। उनके शैक्षिक विचार भारतीय बालक को देशभक्त तथा अत्मनिर्भर बनाने पर आधारित हैं।

Scanned with OKEN Scanner

Vol. XCVII, No.1
ISSN: 0022-3301 | YEAR 2024

शिक्षा का स्वरूप – मालवीय जी 'शिक्षा' और 'विद्या' में अन्तर बताते हुए कहते हैं कि शिक्षा से सीखना समझ लिया जाता है, किन्तु विद्या से जानने का बोध होता है, जो सीखने से भिन्न है। शिक्षा विद्या का माध्यम कही जा सकती है। मालवीय जी विद्यार्थियों को सुसंस्कृत तथा परिष्कृत बनाने हेतु सामाजिक तथा पारिवारिक वातावरण को सबसे महत्वपूर्ण मानते थे। उनके अनुसार व्यष्टि की जगह समष्टि पर महत्व देना चाहिये। मालवीय जी का शिक्षा से तात्पर्य हृदय और मन की सारी शक्तियों का समुचित विकास एवं उसकी पुष्टि है।यहाँ हृदय का आत्मा से और मन का सम्बन्ध बुद्धि, विवेक और मस्तिष्क से लिया गया है।

शिक्षा के लक्ष्य – पं. मदन मोहन मालवीय जी के अनुसार शिक्षा वह है जिससे मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो। सर्वांगीण विकास के अन्तर्गत मालवीय जी ने शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सांवेगिक विकास को स्थान दिया। महामना के अनुसार शिक्षा वह है जो व्यक्तित्व निर्माण के साथ–साथ अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को भी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करती है।

शिक्षा के उद्देश्य – "यदि देश का अभ्युदय चाहते हो तो सब प्रकार से यत्नकरो कि देश में कोई बालक या बालिका निरक्षर न रहे।"– महामना

मालवीय जी ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये हैं–

1. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्म साक्षात्कार कराना है।
2. शिक्षा साक्षरता वृद्धि के साथ बालक का सर्वांगीण विकास करे।
3. शिक्षा से प्रत्येक बालक आत्मनिर्भर बने।
4. शिक्षा का उद्देश्य कला, विज्ञान तथा अन्वेषण दृष्टि की वृद्धि करना है।
5. देश में शिल्प, कृषि, वाणिज्य आदि से सम्बन्धित शिक्षालयों का अधिकाधिक विकास किया जाना चाहिये।
6. व्यक्ति का पुरातन व नवीन एवं भारतीय तथा पाश्चात्य विचारों के अनुसार व्यक्तित्व निर्माण करना शिक्षा का उद्देश्य है।
7. शिक्षा का उद्देश्य बालकों में राष्ट्रप्रेम की भावना जाग्रत करना है।

शिक्षा के स्तर – पं. मदन मोहन मालवीय जी ने शिक्षा के स्तरों को तीन प्रकार से विभक्त किया है, जो निम्न हैं–

1. **प्राथमिक शिक्षा स्तर** – मालवीय जी के अनुसार प्राथमिक शिक्षा को अधिक से अधिक व्यावहारिक बनाया जाये। जिसमें सामान्य विषय के रूप में मातृ भाषा, गणित, सामान्य विज्ञान, सामाजिक विषय के साथ–साथ चित्रकला, हस्तकला व औद्योगिक कला को सम्मिलित किया जाये।
2. **माध्यमिक शिक्षा स्तर** – माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत उन विषयों को लिया जाये, जिनसे बालक अपनी आजीविका कमा सकें। मालवीय जी ने माध्यमिक स्तर पर औद्योगिक व व्यावसायिक विषयों पर अधिक बल दिया है।

Scanned with OKEN Scanner

Vol. XCVII, No.1
ISSN: 0022-3301 | YEAR 2024

3. उच्च शिक्षा स्तर – उच्च शिक्षा के अन्तर्गत मालवीय जी ने शिक्षा के प्राचीन व आधुनिक तथा वैज्ञानिक व नवीन अनुसंधान के विषयों पर चर्चा की। उच्च शिक्षा स्तर पर वर्तमान सभ्यता की अनुकरणीय तथा लाभदायक बातों के साथ भारतीय सभ्यता का उचित सामंजस्य स्थापित किया जाना चाहिए।

शिक्षक–शिक्षार्थी –मालवीय जी के अनुसार विद्यार्थी– 'वह है जो यह भाव चित्त में रखता है कि उसे अपने को इस योग्य बनाना चाहिये, जिससे वह भारत माँ की अच्छी सेवा कर, अपनी विद्या, अपने चरित्र और अपनी देश–भक्ति से अपने देश का गौरव बढ़ा सके।' उनके अनुसार विद्यार्थियों को कर्त्तव्य के रूप में विद्या का अभ्यास करना चाहिए और उसे देश के हित व अनहित की बातों का ज्ञान होना चाहिए।

मालवीय जी के अनुसार शिक्षक एक महान व्यक्तित्व है। बिना शिक्षक के शिक्षार्थी को ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। शिक्षक विद्यार्थी का पथ प्रदर्शक, मार्गदर्शक, भाग्यनिर्माता होता है। अतः शिक्षक को अपना जीवन ऐसा बनाना चाहिए जो विद्यार्थियों के लिए अनुकरणीय हो। शिक्षक के प्रति मालवीय जी के विचार ईश्वर सदृश हैं। उनका मानना था–

'गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।'

पाठ्यक्रम – मालवीय जी के अनुसार वर्तमान पाठ्यक्रम न तो छात्रों को भावी जीवन के लिए तैयार कर पाता है और न ही अपनी संस्कृति व सभ्यता की रक्षा करने में सक्षम है। यह तो पूर्ण रूप से पुस्तकों पर आधारित पाठ्यक्रम है जो मात्र रटने पर बल देता है। मालवीय जी के अनुसार पाठ्यक्रम में निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए –

1. वेदों की शिक्षा पर आधारित ज्ञान का विकास करने वाला।
2. धर्म व संस्कृति का ज्ञान एवं विकास।
3. प्राचीन व अर्वाचीन ज्ञान का समन्वय।
4. भाषा व साहित्य पर आधारित।
5. विज्ञान व तकनीकी पर आधारित।
6. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का समायोजन।
7. भविष्योन्मुखी

शिक्षण विधि – मालवीय जी भारतीय संस्कृति व सभ्यता के अनुरूप प्राचीन शिक्षा के समर्थक थे। इसलिए उन्होंने शिक्षण विधियों के अन्तर्गत पारम्परिक शिक्षण विधि के रूप में चिन्तन, मनन एवं स्वाध्याय को रखा। तथापि उन्होंने शिक्षण विधियों में वैज्ञानिक, औद्योगिक और मानविकी पक्षों पर अधिक बल देते हुए आधुनिक विधियों के समावेश की बात कही। इन्होंने शिक्षा में मानव प्रकृति के आधार पर निम्न विधियों पर बल दिया –

1. वाचन एवं पठन

Scanned with OKEN Scanner

Vol. XCVII, No.1
ISSN: 0022-3301 | YEAR 2024

2. निदिध्यासन विधि
3. स्वाध्याय विधि
4. उपदेश एवं भाषण विधि
5. प्रयोगात्मक विधि
6. अनुवर्ग विधि (ट्यूटोरियल विधि)
7. करके सीखना।
8. निरीक्षण विधि।

विद्यालय – मालवीय जी ने अति सुन्दर शब्दों में विद्यालय को स्पष्ट किया है– "इमारतें विद्यालय नहीं हैं।" अर्थात् जहाँ शिक्षक, विद्यार्थी और ज्ञान हो वह विद्यालय है। विद्यालय एक प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के रूप में है। मालवीय जी के अनुसार विद्यालय व स्थान है जहाँ पूर्व निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षा के विविध क्रियाकलाप आयोजित किये जाते है। विद्यालय का वातावरण सर्वधर्म समभाव पर आधारित हो, जहाँ किसी प्रकार का भेदभाव न हो।

स्त्री शिक्षा – पं. मदन मोहन मालवीय जी भारतीय सनातन परम्परा के उपासक माने जाते हैं। भारतीय परम्परा में स्त्री को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हम कह सकते हैं कि मालवीय जी के लिए नारी पूज्य थी। मालवीय जी की दृष्टि में स्त्री की शिक्षा ही समाज और परिवार की शिक्षा है। उनका मानना था कि भारतीय समाज में वर्तमान समय में व्याप्त बुराइयों एवं अंध – विश्वासों को स्त्री शिक्षा से ही दूर किया जा सकता हे। स्त्री–शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु मालवीय जी ने निम्न सुझाव दिये –

1. वर्तमान समय में स्त्री – शिक्षा पर अधिक बल दिया जाए।
2. बालिकाओं के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया जाए।
3. स्त्री–शिक्षा से सम्बन्धित संविधान में व्याप्त प्रावधानों व कानूनों को दृढ़ता से लागू किया जाए।

व्यावसायिक शिक्षा – मालवीय जी ने देश में निर्धनता एवं बेरोजगारी सम्बन्धित समस्याओं को देखा, उन्होंने इसका एक ही उपाय बताया–शिक्षा के हर स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। इसलिए मालवीय जी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रारम्भ से ही कृषि, विज्ञान, गणित, इंजीनियरिंग और तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था की थी। मालवोय जी ने सन् 1909 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में भारत में औद्योगिक, यांत्रिक, शिल्प शास्त्र से सम्बन्धित शिक्षा के विकास पर अधिक बल दिया। मालवीय जी का मानना था कि विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा दी जाये जिससे वे किसी न किसी उपाय से जीविकोपार्जन कर सकें। मालवीय जी के शिक्षा संबंधी विचार– समग्र दृष्टि में :

"सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयङ्गं
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत।।"

उक्त श्लोक में मालवीय जी की हृदय भावना प्रकट होती है। वे प्राणीमात्र को सुखी एवं स्वस्थ देखना चाहते थे। सबका कल्याण चाहते थे। नूतन और पुरातन ज्ञान के समन्वय की आयोजना महामना के व्यक्तित्व की

Scanned with OKEN Scanner

Vol. XCVII, No.1
ISSN: 0022-3301 | YEAR 2024

विशेषता है। उनका मानना था कि मानव कल्याण ही सर्वोपरि है। शिक्षा से व्यक्ति को ज्ञान के साथ व्यावहारिकता, चरित्र निर्माण तथा आत्मनिर्भरता प्राप्त होनी चाहिए। ये ही शिक्षा के उद्देश्य और कार्य हैं। पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिये जिसमें भारतीय संस्कृति का समावेश, मूल्य शिक्षा तथा ज्ञान का विकास हो। शिक्षण विधियों में मालवीय जी ने प्राचीन विधियों के साथ–साथ आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रयोग पर बल दिया। मालवीय जी के अनुसार शिक्षक का व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए कि विद्यार्थी उसके समस्त गुणों को सीख सकें। मालवीय जी के अनुसार विद्यालय वह स्थान है जहाँ समाज और संस्कृति का संरक्षण व विकास होता है। मालवीय जी ने स्त्री शिक्षा के साथ–साथ व्यावसासिक शिक्षा पर भी बल दिया। साथ ही शिक्षा में गरीब व पिछड़े वर्गों की शिक्षा और राष्ट्रीयता की शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया। शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय है, इसीलिए उन्हें भारतीय शिक्षा का अग्रदूत कहा जाता है।

उपसंहार – यदि देखा जाए तो हम कह सकते हैं कि पं. मदन मोहन मालवीय जी के शैक्षिक विचार वर्तमान शिक्षा हेतु वरदान सिद्ध हो रहे हैं। क्योंकि वर्तमान समय की शिक्षा में जहाँ नवीन स्रोतों को लिया जा रहा है, वहीं प्राचीन संस्कृति, वेद, पुराण एवं ज्ञान को सम्मिलित किया जा रहा है। आज की शिक्षा में प्राचीन शिक्षा के सभी उद्देश्यों को महत्व दिया जा रहा है। पं. मदन मोहन मालवीय जी ने भाषा की दृष्टि से जहाँ हिन्दी को सर्वोपरि रखा, वहीं राष्ट्र निर्माण की भी बात रखी। वर्तमान शिक्षा में इन सन्दर्भों को सम्मिलित किया जा रहा है। मालवीय जी के शिक्षा विचार आज व भविष्य की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

हिन्दी सन्दर्भ –

1. अग्रवाल, वासुदेव शरणः महामना मालवीय, लेख और भाषण (धार्मिक–1) बनारस, प्रकाशन–काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।
2. तिवारी, उमेश दत्त (1988): महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी जीवनी, वाराणसी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।
3. पचौरी, गिरीश (2010): भारतीय शिक्षा दर्शन, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
4. पाण्डेय रामशकल (2008): विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
5. पाठडेय रामशकलः शिक्षा का दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
6. लाल, मुकुट बिहारी (1978): महामना मदन मोहन मालवीयः जीवन और नेतृत्व, वाराणसी, मालवीय अध्ययन संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।
7. लाल एवं तोमर (2008): विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
8. वर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद (1972): विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।

English Reference –

1. Singh, Ram Pratap and Shukla, R.P. (2013): 150 years of Mahamana's : Service to Humanity, Delhi, Bharti Publications.

Scanned with OKEN Scanner

Vol. XCVII, No.1
ISSN: 0022-3301 | YEAR 2024

पत्रिकाएँ –

1. प्रज्ञा (बी.एच.यू., जर्नल), 1976–77, महामना हीरक जयंती अंक।
2. शिविरा पत्रिका : दिसम्बर, 2009, बीकानेर, शि.वि.रा.

Website –

1. http://www.wikipedia.org/

Scanned with OKEN Scanner